अंतरा-शब्दशक्ति

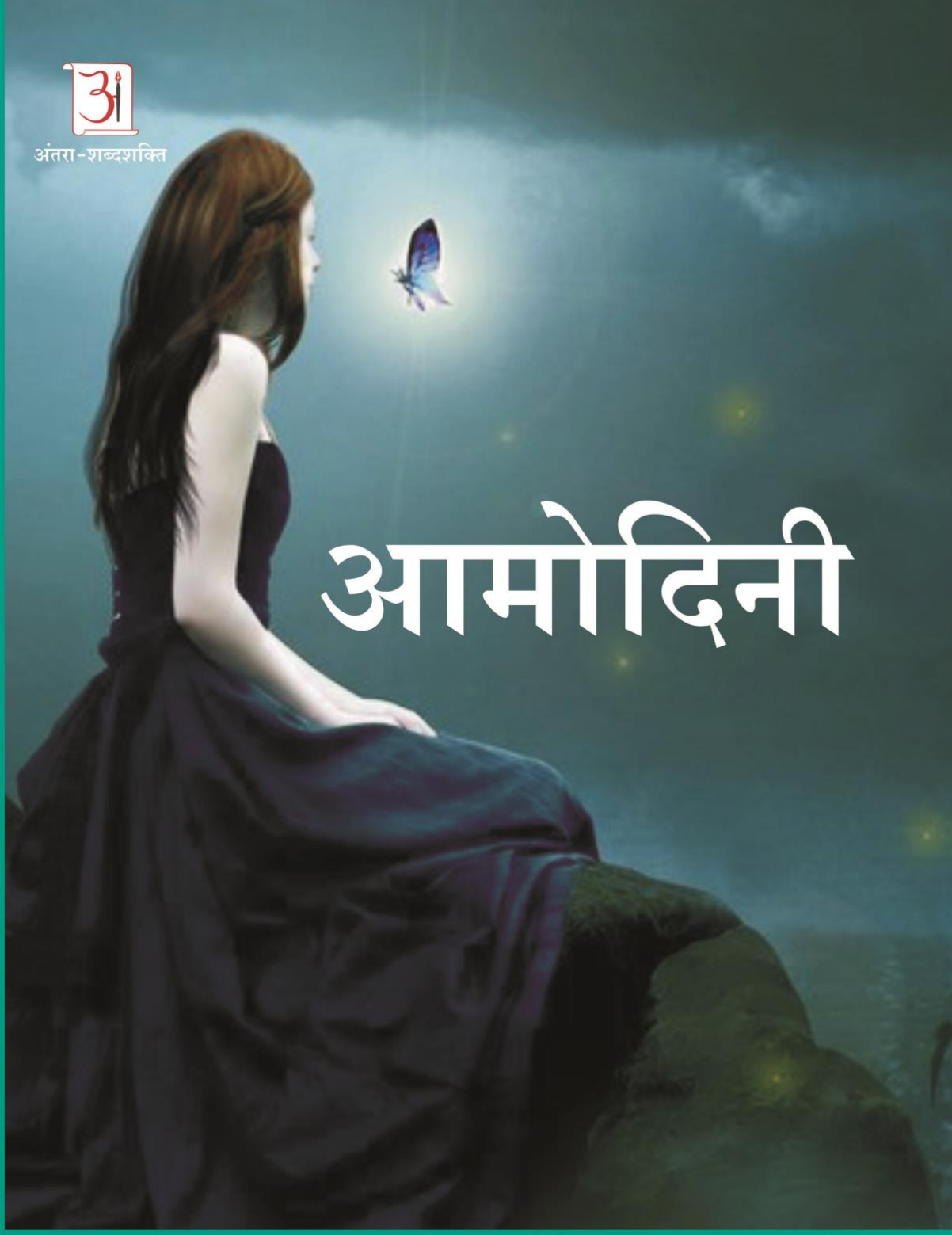

आमोदिनी

सवैया संचय

अनुराधा पाण्डेय

आमोदिनी

(सवैय्या संचय)

अनुराधा अमरनाथ पान्डे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-86666-02-4

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा- एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabdshkti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८- अनुराधा अमरनाथ पान्डे

मूल्य - ५५.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Aamodhini by Anuradha amaranth pandey

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भाव पुष्प

अत्यंत गौरवान्वित क्षण है मेरे लिए कि मेरी तीसरी पुस्तक सवैया संचय "आमोदिनी" लगभग एक महीने के अंतराल में आ रही है। इसमें १०८ सवैये का संचयन है।

श्रृंगार का संयोग पक्ष हो या वियोग,रसराज श्रृंगार ने मेरे हृदय को पूर्णतया प्रभावित किया क्योंकि श्रृंगार ही एकमात्र ऐसा रस है, जिसमें हृदय पर प्रभाव डालने की अद्‌भुत क्षमता है। मेरे द्वारा रचित सवैया श्रृंगार रस से ओतप्रोत है, नायक नायिका के विभिन्न क्रीड़ाओं, काम चेष्टाओं, आलिंगन, परिरम्भन, विभिन्न प्रकार की रति-केलियों का जबरदस्त चित्रण है, जो पाठकों को यथार्थता की अनुभूति कराएगा। रचनाकार की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि वह पाठकवृन्द को अपने काव्य रस में पूरी तरह रसबोर करे, ताकि पाठक मन उस पात्र को जीने हेतु विवश हों।

"आमोदिनी" अपने आप में अनूठा सँग्रह है, इसमें पिय के विदेश गमन पर, नायिका की उद्विग्नता, बेचैनी एवम उसकी विरह-विदग्धता का हृदय विदारक चित्रण है, वहीं दूसरी ओर परदेश से लौटकर आए नायक के दर्शनार्थ, उत्सुक एवम् उत्कंठित नायिका की विह्वलता का वर्णन है, कुछ सवैया राधा गोपी वल्लभ के प्रेमाधारित हैं एवम् अनेक सवैयों में मानव मन का मनोवैज्ञानिक चित्रण भी अपने पूरे कलेवर में परिलक्षित होते है । मेरे सवैयों में "मदन" मेरा सर्वाधिक प्रिय नायक है।

कुल मिलाकर विरह ताप जन्य कृशता, तीव्र संताप सम्बन्धी उहात्मकता का प्राधान्य है यह सवैया सँग्रह।पाठक जैसे-जैसे इसे पढते

जाएँगे हृदय बरबस ही उस भाव भूमि पर पँहुचने को मजबूर होगे और हृदय उन तमाम भावों को ठीक वैसे ही जीने को मजबूर होगे जैसा कि मैने रचना काल मे अनुभव किया है और सदा से करती आ रही हूँ। आशा करती हूँ यह काव्य संग्रह काव्य परक उदेश्यों को पाने मे सर्वथा सफल रहेगी एवम् पाठक अनंत काल तक इसे अवगाह कर आनंद लाभ करते रहेंगे ।

भवदीय
अनुराधा अमरनाथ पाण्डेय

आमोदिनी

मन की हिरनी थिर होत कहाँ, जब पावस आग लगाय रही।
पिय ! नागिन सेज बनी रतिया,जियरा विरही तरपाय रहीं
अब चैन कहाँ क्षण को मदने!,जब रोग हिया सु लगाय लियो
निशि वासरि नैन बने बदरी,पथ में नित नीर बहाय रहीं।१।

सून पड़ी उर राह लखौं पियु लूट गयौ बटमार करौं हैं।
रात पिया सखि ! स्वप्न तले नित छेड़ रहौं मनुहार करौं हैं।
आँख खुली तब पास न पा सखि नैनन में भिनुसार करौं हैं।
प्यार भयौ अति पूज्य अजौं उर ते उर ही अभिसार करौं हैं।२।

हर वार बड़ा गहरा सजणा,तुम जीत गए,हम हार गए
अनजान बने हिय की गति से,बस रीत गए,उर वार गए।
सुध भूल गयी जब सेज पिया,लट चूम कपोल सवार गए,
क्षण धीर मिटा,तन ताप बढ़ाजब लाज तले,मन ढार गए।३।

विकसे जब नव्य बहार प्रिये! तब मेघ मयूरहि रास रचावे।
जियरा हुलसे मन क्रोध लसे,पिय! कोकिल कंठ मिठास न भावे।
अब धीरज भी मुख मोड़ रहा,कब के मितवा परदेश बसे रे...
उर के बसिया अब तो रसिया,मन नाद विनोद न मंगल गावै।४।

जब पाँव लगे खुद ही डिगने,तब जान लियो सखि! फागुन है।
तरसे अँखियाँ पिय से मिलने,तब जान लियो सखि!फागुन है।
जब चंदन सांस लगे घुलने,तब जान लियो सखि!फागुन है।
उर में रति प्यास लगी पलने,तब जान लियो सखि!फागुन है।५।

पियु के घर आवन की सुनिके,कब से उर दीप जलाय रखी मैं ।
धड़के जियरा मनवा हरषे,मन आंगन नेह सजाय रखी मैं ।
जब दूर बसे सजना! हमसे ,उर में मृदु चित्र बसाय रखी मैं ।
नित नीर दिए मृदु नेह मिला,मधु बर्षक पौध लगाय रखी मैं।६।

पाँव पड़ी मृदु पैजनिया हिय की रति नित्य बढाय गयी ।
दूर बसे मदने हमसे नित पीर जिया भड़काय गयी ।
याद करूँ मृदु बैन सखे ! विरही तन आग लगाय गयी ।
साँचि कहो हमसे मदने !सुधि मोर तुम्हें बिसराय गयी ।७।

हमने न निसर्ग संभाल रखा,अब क्रुद्ध हुई बरसात छली है।
जल के बिन जीवन सून हुआ, जड़ चेतन में बहु प्यास पली है।
गृह कूप सभी जल रिक्त हुए,अब नीर बिना सब आस जली है।
अति दूर हुआ अब नीर अरी!घट ले सिर पे सखि!दूर चली है।८।

तट आज नदी जन शून्य लगे,मदने ! चल संग विहार करेंगे।
मृदु जीवन धन्य करें मिलके,कटि आज गहो अभिसार करेंगे।
लब कंपित देख अरे ! मदने,निज ओष्ठ धरो बहु प्यार करेंगे।
सच मान कहूँ सुन बात सखे,कर छार न जीवन सार करेंगे।९।

सखि!बेबस नैन बने बदरा, अब पावस छाय गयी मदने!
जब रूठ पिया परदेश बसे,उनकी छवि भाय गयी मदने!
उर बीच सदा अब याद बसी,बदरी घहराय गयी मदने!
अब नींद कहाँ इन नैनन में,रति पीर समाय गयी मदने!१०।

भुज पाश कसा सखि री !पियु ने,बिजुरी तब कौंध गई तन में।
अति लाज लगी,तव गंध पिया,जब फैल गई तन में मन में।
इससे अधिकाधिक रंग अरी ! कित और लसे उर आँगन में।
अब धन्य हुई पियु रे !मदने,तुम आन बसे लघु जीवन में।११।

चूम लिया अधराधर को तब,हार गयी तन रे! मदने,
मौन खड़ी अब सोंच रही ,थम जाय यहीं क्षण रे!मदने,
चातुर नैन बड़े ठगिनी,पल में ठग ली,मन रे! मदने,
बेकल हो हरषाय रही,जस छाय रही घन रे !मदने।१२।

क्षण एक न व्यर्थ करो शुचिते!चल आ अब वंद्य विहार करें।
द्रुत शाम ढले मृदु जीवन की,सब भूल चलें अभिसार करें।
यह पाप व पुण्य अमान्य वृथा,मृदु जीवन क्यों निज क्षार करें ।
चल अंक भरो क्षण प्यार करें ,क्षण चंद न सार असार करें।१३।

मृदु छंद अभी बहु शेष बचे,सुन ! आज विराग तजो मदने !
मद ! आज चलो न विहार करें ,मन रंजक राग भजो मदने !
शुभ चंदन गंध बसा मृदु रे ! नव काम लसो व सजो मदने !
उर गान सजीव करें चलके,चल आज पुनीत बजो मदने !१४।

जब तंत्र बना बहरा सुन रे!तब कौन गुने जन निर्बल के।
सब बात करे अपने मन की,कह कौन ढके तन निर्बल के।
हम बीन रहे कचरा जग के, कचरा जग नित्य बिछाय रहे....
मत घोल अरे !विष बोल सुनो,कर बिद्ध न जीवन दुर्बल के।१५।

काम कमान लिए उर में रतिके! करने अभिसार चली है।
सिक्त हुआ रस से मदने!रति लेकर काम कटार चली है।
भव्य लगे मधुमास विभो! मधु लेकर मूर्त बहार चली है।
मूर्त बनी जिमि काम रति!सब अंग अनंग बिसार चली है।१६।

मदने ! तुम नैनन में बसते,अब और न अंजन नैन बसे ।
क्षण एक न दूर करो भुज से,विरही बन नागन नित्य डसे।
नित आ सजना अभिसार करें,रखना कटि में भुज बंध कसे ।
चल भूल चलें जग व्यंग सभी,मृदु प्रीत सदा उर आन लसे ।१७।

चल ! आज गले लग जा न शुभे,फिर शायद री ! यह रात न हो ।
किसको सजनी ! यह ज्ञात कहो,कब भाग्य छले पुनि बात न हो ।
लिपटा तन जी भर रोय विभो ! नित नैनन की बरसात न हो ।
मधुमास न नित्य रहे मदने! जब ठूंठ हुए पुनि पात न हो ।१८।

पहिले प्रभु !पाँव पखारन दो,पुनि नाव चढ़ा उत पार करो हौं।
क्षण धैर्य धरो,प्रभु साथ सिया,सुनि पूर्व कथा मन मोर डरो हौं।
जित पाँव शिला जड़ नारि कियो, इत काठ सुकोमल नाव अहो री!
तब कौन सहाय करो हमरौ,तरणी जब पाँव कु धूरि पड़ौ हौ।१९।

रतिके रसबोर हुई मदने! अब शीघ्र पयान करो रसिया
मृदु यौवन रीत न जाय कहीं, इसका नित ध्यान करो रसिया।
अपने उर को मृदु साज बना, मनरंजक गान करो रसिया।
कब से रतिके मृदु आस लिए,अधराधर पान करो रसिया।२०।

मृदु प्रेम प्रगाढ़ सदा शुचिते! कम हो यदि प्रेम न तैं कहिए ।
पथ एक मुखी चिर सत्य यही,यह मार्ग न तौल बिना गहिए।
अपराध कहें वरदान कहें,यह दण्ड सुधा शुचि हो सहिए।
कुछ प्रेम प्रकार न हो बहुधा,घृत एक मिले जितना महिए ।२१।

जब चाँद हुआ कुछ मौन सखे,छत आज पुकार रही तुमको ।
मदने ! शुचि याद पराग लिए,मृदु प्रीत दुलार रही तुमको ।
किस ठौर अमंद लिए तुम हो,नित हेर बयार रही तुमको ।
दिन रात बनी पगली सुन ! मैं,अब नित्य विचार रही तुमको ।२२।

मृदु सावन मास भयो सजना !अब आन बसो निज आँगन में।
निज देश पयान करो अब तो,मृदु फूल खिले थिर यौवन में।
मन मोर न साजन नाच रहा,अघ आग लगी जिमि जीवन में।
पियु आप नहीं जब साथ रहें,तन आग लगे इस सावन में।२३।

विरही मन में नित ताप उठे,पियु आप गए परदेश जभी ।
अब सावन शीतलता न लभे, पिक बैन लगे जिमि काक सभी ।
जब बूँद पड़े जियरा तरसे ,द्रुत वेग पयान करो न अभी ।
तुम देख ! अरे पगली विरही,हत प्राण तजे सु कभी न कभी ।२४।

कबलौं मदने !विरहाग्नि जले, रतिके !अब राह निहार थकी है !
नित नीर बहे अब नैनन से,रति पीर हिया न सँभाल सकी है !
गिनती दिन नित्य अरी ! कबसे,परदेस बसे पिय चैन न आवे-
मद दूर न हो बिनु साजन के,रतिके मृदु प्रीत की भाँग छकी है ।२५।

मनभाव अगाध भरो सजना, अलसाय रही अँखियाँ कब से।
चिरदीप जलाय रखा हिय में,तरसाय रही बतियाँ कब से।
अब दोष कहो किसका इसमें, जब सौंप दिया सजना!मन को,.
अब कंटक सेज बना सजना, तड़पाय रही रतियाँ कब से।२६।

अब अंक भरो मुझको सजना,क्षण बीत रहे अनुरंजन के ।
क्षण एक न व्यर्थ करो अब तो,दृग भी निरखो मद खंजन के ।
यह काम कमान तुम्हें न लगे,कुछ मूल्य गणो दृग अंजन के ।
जग में कुछ सार न और विभो! बिन प्रीत यथा रति रंजन के ।२७।

कोमल शावक देह लिए,रतिके मग में बलखाय चली है।
रँग फुहार भरे उर में, पिय से मिलने इठलाय चली है।
नैनन से रतिवार करे,मदने! उर काम बढ़ाय चली है।
चन्दन वास सुवास लिए,मृदु नैनन को मटकाय चली है।२८।

नव आस जगी उर प्यास मिटे,अबके मृदु सावन तो बरसे ।
अब तो मन रंग तरंग उठे, नित सोच यही मनसा हरषे।
पिय! किन्तु नवीन अजीब मिले, गति यौवन हत्य अभी तरसे ।
अति भूल हुई मतदान किए,मन रुष्ट कि क्यों निकली घर से ।२९।

छंद विधान रचो न रचो,मृदु काव्य रचो उर रंजक मीठे ।
भार गिनो न गिनो मदने ! मृदु शब्द चुनो दुख भंजक मीठे ।
भाव भरे मृदु शब्द प्रिये !गुनते कब हैं पर निंदक मीठे ।
राज कहो ! कविराज हमें,लगते किनको पग बंधक मीठे ।३०।

तुम आज बसन्त बनो सजणा, मन मे हरषाय पलाश खिले ।
मन का मधुमास तभी महके,कटि पाश कसो हम आन मिले ।
विहगे चहके तरु साँस चले,तुम नीर भरो मृदु पात हिले ।
पिक गान करे मृदु प्रीत लिए,सजणा! न रहे मृदु ओठ सिले ।३१।

अधराधर बीच धरे मुरली, सँग गोपिन रास रचाय रहे।
मुख पंकज कंज विलोचन री! प्रभु गौर छटा बिखराय रहे।
मृदु संदल गंध भरे तन में, वृषभानु लली कु रिझाय रहे।
लट लोल कपोल कलोल करे,चित चंचल भाव दिखाय रहे।३२।

पिय से मिलने विरहाकुल हो,मसि नैनन डारि रिझाय चली।
मृदु संदल गंध भरे तन में,घन केश घटा बिखराय चली।
नित प्रीत घनी बदरी बनि के,नभ में रतिके! घहराय चली।
हिय में पियु को नित कैद किये,चित चँचल भाव छुपाय चली।३३।

मितवा! क्षण एक न दूर रहो,दिन-रैन जलूँ ,शत बार मरूँ
जिस शाख खिले उर पुष्प प्रिये !लिपटूँ उससे तन धन्य करूँ।
रस रिक्त लिए उर बैठ अरी !,नित राह तकूँ घट प्रीत भरूँ।
मृदु वन्य प्रसून बनूँ यदि तो,तुम थाल बनो खिल सूख झरुं।३४।

बनिके मणिका, रति की सजना, मन से, तन पे, बिखरुँ रसिया।
पिय भाव भरे अधराधर को चख के,दृग में निखरुँ रसिया।
जब नैन मिले अति लाज लगी मन ही मन में सिकडूँ रसिया ।
मृदु नैन झुके तृण नोच रही ,धरणी नख से रगडूँ रसिया ।३५।

अंक नहीं क्षण एक लिए ,पियु नैन मिला परदेश सिधाए।
आग लगी मृदु यौवन में ,अब गात कपे भर नैनन आए।
रात जगूं दिन आह भरूँ,दुख आज कहो ! तुम कौन मिटाए।
प्रीत लगा मृदु रोग दिए,पियु आप गए क्षण में निठुराए।३६।

जब बीत गयी रजनी पल में,पिय! नैनन में भिनुसार हुआ।
भुजपाश बधी,लिपटी सिमटी,चुपके चुपके मनुहार हुआ।
पिय! याद मुझे अब भी रतियाँ,अधरों पर चुम्बन वार हुआ।
किस भाँति कहूँ अनुराग पिया, तन पे मन का अभिसार हुआ।३७।

प्रिय!नैन बसे दिन रैन तुम्हीं,क्षण एक न दूर रहो मन से।
जब से उर आनन आप बसे, मधुगंध उड़े मृदु कानन से।
पिय!रीझ गयीं जब से अँखियाँ,मन चातक बाट निहार रही।
अब और शिकायत भी न रही,तुमसे प्रभु से,इस जीवन से।३८।

नभ बूँद झरै मणिका बनि के, पुरवाइ बहै जियरा हुलसावे।
अलि कुंज फिरे मधुगन्ध पिये,हरसे पुलके रति काम बढ़ावे।
विरही मन म्लान हुआ पिय री!रतिया सुधियाँ, मन को तरसावै।
पिय नागिन सेज बनी अब तो,हिय पावस में जियरा झुलसावे।३९।

सौतन सी रजनी मदने !उर में रति आग जलाय रही है ।
आवन री ! पियु की सुनि के,पिछली सुधियाँ हुलसाय रही है ।
होठ लजाय रही सजना!अँखिया पथ पुष्प बिछाय रही है ।
मूर्त सदेह लगे छवि री ! हँस के छतिया धड़काय रही है ।४०।

सबके हित पुष्प कहाँ जग में,बस स्वप्न बुने पर खार मिले ।
जब नाव फँसे मझधार कभी,सबको न यहाँ पतवार मिले ।
पथ राज मिले कुछ को जग में ,कुछ को बस धार कटार मिले ।
बड़भाग यहाँ कुछ लोग जिन्हें,सब सार मिले बहु प्यार मिले ।४१।

उपलब्ध सु-कंचन लौह लगे,बिन लब्ध मृदा अति कंचन सा ।
मन की गति गूढ न जान पड़े,लगता कटु काक सु-खंजन सा ।
लगता कम है शुचि भाव शुभे ! जग को मन रंजन रंजन सा ।
जग की रचना अति गूढ बनी,छल वाक् लगे दुख भंजन सा ।४२।

चल मौन रहूँ कुछ भी न कहूँ,हम टेक धरे तुम गीत बुनो।
प्रण आज करें सुन री !शुचिते!हम प्रीत गुणे तुम रीत बुनो ।
शुचि बात कहूँ प्रिय ध्यान धरो ,हम हार बुने तुम जीत बुनो ।
हमने उर ही जब हार दिए,तुम स्वप्न निरंतर मीत !बुनो ।४३।

कुछ चित्र शुभे !हृद मे पनपे,हमने भर रंग दिए क्षण में।
अब और कहूँ कितनी बतिया,अति दंश भरा इस जीवन में ।
तरु प्रीत निरंतर सींच रहा,मन के इस क्रंदित आँगन मे ।
कुछ स्वाद न कोकिल कूक विभो!पतझार लगे मन कानन में।४४।

सबके हित पुष्प कहाँ जग में,बस स्वप्न बुने पर खार मिले ।
जब नाव फँसे मझधार कभी,सबको न यहाँ पतवार मिले ।
पथ राज मिले कुछ को जग में ,कुछ को बस धार कटार मिले ।
बड़भाग यहाँ कुछ लोग जिन्हें,सब सार मिले बहु प्यार मिले ।४५।

उपलब्ध सु-कंचन लौह लगे,बिन लब्ध मृदा अति कंचन सा ।
मन की गति गूढ न जान पड़े,लगता कटु काक सु-खंजन सा ।
लगता कम है शुचि भाव शुभे ! जग को मन रंजन रंजन सा ।
जग की रचना अति गूढ बनी,छल वाक लगे दुख भंजन सा ।४६।

चल मौन रहूँ कुछ भी न कहूँ,हम टेक धरे तुम गीत बुनो।
प्रण आज करें सुन री !शुचिते!हम प्रीत गुणे तुम रीत बुनो ।
शुचि बात कहूँ प्रिय ध्यान धरो ,हम हार बुने तुम जीत बुनो ।
हमने उर ही जब हार दिए,तुम स्वप्न निरंतर मीत !बुनो ।४७।

कुछ चित्र शुभे !हृद मे पनपे,हमने भर रंग दिए क्षण में।
अब और कहूँ कितनी बतिया,अति दंश भरा इस जीवन में ।
तरु प्रीत निरंतर सींच रहा,मन के इस क्रंदित आँगन मे ।
कुछ स्वाद न कोकिल कूक विभो!पतझार लगे मन कानन में।४८।

शुचि रश्मि न हास उदास विभो,अति चीर रही मदने उर को ।
सब साज लगे द्रुत भंग हुआ,लगता जिमि सर्प डँसे सुर को ।
चल मान न शुचिते ! बात सही,हँस लो अब तो कल को घुड़को ।
कह कितना शेष अभी शुचिते ! अब दण्ड सुप्रीत क्षुधातुर को ।४९।

तुमने हमको अपना समझा, मदने!अब जीवन धन्य हुआ है।
पिय वास किया जबसे हिय में, तबसे उर-आँगन धन्य हुआ है।
भुजपाश लिया जबसे सजना,अभिसारित यौवन धन्य हुआ है।
बरसूं नित री बदरी बनिके,अति पावन सावन धन्य हुआ है।५०।

तन से फिसले परिधान सखी,अरि यौवन नित्य उफान करे ।
अभिलाष अरी !इस जीवन में,सजना अति शीघ्र पयान करे ।
परिरंभ भरे चित चौर्य करे,मन में रति वेग प्रदान करे ।
सजना बिन काम कमान वृथा,मनुहार बिना न गुमान करे ।५१।

सजना परदेश बसे सजनी,सुधियाँ पर साथ चले मग में।
चहुँ ओर दिखे प्रतिरूप वही,अग में जग मे मृग में खग में।
लिपटी सुधि से दिन रैन कटे,बचती तब शेष कहाँ जग में।
अति स्वर्गिक याद सुवास भरे,लहु भरता नित्य सुधा रग में ।५२।

मृदु योग बना पियु भेंट गये,अब बारह मास बसंत लगे ।
तन दूर सही पर पास लगे, रति नित्य चिरंतन भाव जगे ।
हर रोम अशेष सुरम्य विभो !तन में मन में प्रिय नाम पगे ।
छवि देख मनोहर भव्य बना,नर, देव खड़े सखि नत्य ठगे ।५३।

रतिया भर छेड़ रहे मदने ! झपकी पलकें कब सत्य कहो !
दिन में कटि बाँध लिए फिर से,पुनि क्यों कहते नव प्रीत गहो ।
कहना मुझको यह बात अरे !,समझी न कभी यह भेद अहो !
पियु नींद दिये गतिरोध अभी ,क्षण धीर धरो चुपचाप दहो ।५४।

वर कौन मिला तुझको शुचिते !यह कौन रसायन नैन चढ़े।
हर बार मिले जब भी इनसे,लगता शुचि नूतन काव्य पढे ।
नत माथ उसे जिसने कर से,इतने मन वाँछित कुंभ गढ़े।
लगता चुपके जग से शुभगे !यह स्वर्ण चुरा निज शीश मढ़े ।५५।

जब द्रष्ट्य हुई दृग को रतिके, अवलोकन में दिन रैन गए ।
उर में उतरी क्षण में तब ही !उड़ नींद गई,ह्रद चैन गए ।
मन संग गया उस ठाँव शुभे,उसके जित चंचल नैन गए ।
द्वय कर्ण अधीर हुए सुनते,उसके कित स्वर्गिक बैन गए ।५६।

मितवा !द्रुत बीत गई रजनी ,मृदु चुंबन में परिरंभन में।
सुख चैन घना परिपाक हुआ,चिर रात सनी रति रंजन में ।
कंगना निरखे क्षण में सजना ,क्षण में निरखे दृग अंजन में।
शत जन्म लगे तब वार चलूँ ,उर के सच री !गठबंधन में।५७।

भुजबंध कसो कटि में मदने !लघु जीवन को कुछ सार मिले ।
इस पार चखें रस कुंभ शुभे ! कुछ ज्ञात नहीं उस पार मिले ।
तन के बिन कुंद सुचेतनता,यह मूल अरी !रसधार मिले ।
धरती बड़भाग अरे ! सजना,अभिसार मिले जँह प्यार मिले ।५८।

अब मोल चुका सजना ! कँगना ,सच बोल रहा कुछ ध्यान नहीं।
इतना खनके किस कारण से,तुझको लगता कुछ ज्ञान नहीं।
जब छू न सके बिछुए पग के,लगता तन में अब प्राण नहीं।
क्षण आ न विलास किए जग में,जड़ता यह क्या अपमान नहीं?५९।

अब अंक भरो मुझको सजना,क्षण बीत रहे अनुरंजन के ।
क्षण एक न व्यर्थ करो अब तो,दृग भी निरखो मद खंजन के ।
यह काम कमान तुम्हें न लगे,कुछ मूल्य गणो दृग अंजन के ।
जग में कुछ सार न और विभो! बिन प्रीत यथा रति रंजन के ।६।

सच है चिर प्रीत मुझे तुझसे, मन प्राण सुजीवन वार गए।
घटना जग की यह आम नहीं,बस प्रेय बचा सब हार गए।
मृदु प्रीत सुलेप चढा जबसे,सब तीक्ष्ण तृषामय खार गए।
अब मैं न बचूं अब तू न बचे,यह सोच अहं सब मार गए।६१।

कबसे पतझार रहा वन में,लगता टिकता मधुमास नहीं।
मृदु नीर कहाँ मिलता सबको,मिटती सबकी यह प्यास नहीं।
जिसने जड़ सींच दिया तृण का,मिलती उसको मृदु घास नहीं।
दृग नीर चढा नित पूज्य गना,जड़ पाहन को अहसास नहीं।६२।

सिहरे तन सोच अपार सखी,अभिसार सुहावन प्रीतम के।
दृग मूंद गए धड़के छतिया,अति प्यार सुहावन प्रीतम के।
कटि बंध कसे,गलहार कभी,कर हार सुहावन प्रीतम के।
परिरंभ कसे नखरे सहना,शत बार सुहावन प्रीतम के।६३।

जन शून्य रहे सजना ! तटनी,मृदु चाँद रहे निज यौवन ले।
क्षण एक मिले परिरंभ प्रिये !फिर वार चलूँ शत जीवन ले।
यदि संग बसें मृदु निर्जन भी,चित मग्न रहे फिर कानन ले।
अधराधर चुंबन एक मिले ,फिर क्या करिए मृदु सावन ले।६४।

लगता जिमि भंग चढे सिर में,अब सावन जेठ अमंद भरे ।
सजना जब अंक कसे कटि में,लगता मधु पुष्प पराग झरे ।
सब दंश मिटे गत जीवन के ,इतनी गरिमा मय प्रीत करे ।
अभिलाष बची अब एक शुभे,गलहार लिए द्वय संग मरे ।६५।

जब देख लिया तुमने हमको,मृदु नैन उठा अनुराग भरे ।
चित चोर्य हुआ तबसे सजना,हर रोम हँसे प्रतिरोध मरे ।
लगता अब अंग अनंग हुआ,बहु मानस बाग अमंद झरे ।
झुलसे मन के हर पात विभो,दिखते सब पर्ण सुवर्ण हरे ।६६।

मृदु प्रीत बढा सुन !दूर गए,विरही दुख कौन हरे कहिए !
उर धाव लगा निकसे घर से,विपदा किस भांति टरे कहिए !
बिन प्राण !न देह न चेतनता,निकसे किमि शूल गड़े कहिए !
यह घाव बिना अब साजन के,हृद के किस तौर भरे कहिए !६७।

कह क्या छलिए अब भूल गये,दिन सावन के मृदु यौवन के ?
जब साथ चले मग में मदने !सब भूल गए दिन जीवन के ?
मृदु प्रेम पलाश न याद रहे,खिलते हिलते मृदु आँगन के ?
अब सूख गये मृदु बौर प्रिये !लगते हमको मन कानन के ?६८।

जब आप पयान विदेश किए,रति भी न रही मुझसे क्षण भी ।
पल एक विचार किए न कभी,किस भाँति कटे यह जीवन भी ।
सब व्यर्थ लगे जग की समिधा,अति भार लगे यह यौवन भी ।
बहु शूल लगे मग मे तब से,अब बिद्ध हुए मन भी तन भी ।६९।

पग पैजनिया खनके न सखी,अब काजल नैन कटार नहीं।
बिलखे पग पायलिया मन में,बिन साजन के पतवार नहीं।
कँगना सिर पीट रहा कहता, जग में कुछ शेष न सार नहीं।
बिछुआ निज नैनन लोर लिए,कहती पग से अब प्यार नहीं।७०।

हम बैठ जहाँ मृदु प्रीत बुने,कह ! याद तुम्हें नद वो तट भी ।
कह याद तुम्हे वह गाँव प्रिये !सुधि शेष रहा वह केवट भी
जिसने निज नाव चढाय हमें,नद पार किए बिन खेवट भी ।
वह छाँव जहाँ वर मांग लिए,हम साथ रहें मृत वो वट भी।७१।

सुनना न हमें मन की सुन लो, हृद पास बचा सच तो कहना ।
हम तो शुचि प्रीत पतिंग शुभे! जिसको नित ताप सदा सहना ।
जग को चह नित्य छलो शुचिते!खुद को न छलो कवि का कहना ।
प्रिय त्याग चलो लघु जीवन के,सब दंश यहाँ सहना दहना ।७२।

यदि साथ चलो मृदु बाँह गहो,पथ कंटक नष्ट अरी !क्षण में ।
क्षण हास विलास बिखेर शुभे,कुछ अर्थ लभे लघु जीवन में।
हम हर्ष चुने पहले जग में,कुछ पुष्प खिले मन कानन में।
कह !क्यों यह पीर लता विकसे,अपने मन के मृदु आँगन में।७३।

विरही मन ने प्रण ठान लिया,पियु के न बिना पग पंथ बढे ।
मन के अब वास-सुवास सभी ,उर देव सुपाद अवाध चढे ।
अब एक अनेक कुभेद मिटे,चिर प्रीत न री ! अपवाद गढे ।
जितने जग वंद्य विशेषण हैं,सब प्रीतम नाम सहेज मढे।७४।

अब ज्ञान न योग सुसाध्य शुभे,इक प्रीत सुपंथ लभे जग में।
सब द्वैत मिटे क्षण में इससे,जड़ चेतन में नर में खग में।
शुचि पंथ कठोर रहे क्षण को,कुछ शूल चुभे क्षण को पग में।
पर दृष्टि अनंत प्रगाढ रखे, सब हर्ष लभे शुचिते ! मग में ।७५।

वृषभान लली विरही बनिकै,नित मोहन नाम पुकार रही ।
जँह नंद लला निज पाँव धरे,पलकें वह पंथ बुहार रही ।
क्षण एक न नैनन नींद सखी,तिथि आवन पुण्य उचार रही ।
पियु आ न सके बिनु नैन लखे,यह सोच अशेष निहार रही ।७६।

दिन रैन घुटे मन प्राण अरी!अखिया दुखिया बदरा बन के।
सुधि प्रीतम की उर में उपजै,बिजुरी जस बादर में चमके।
जब नाम प्रिये ! शुचि कान परौ,उर में लगता सजना धमके ।
पग धार दियो जब ही घर को,मन बाग खिले अंगना गमके ।७७।

जब से मुख मोड़ गए सजना, तबसे मृदु नींद न नैनन में।
हृद चैन नहीँ अब तो सजना,रसहीन हुआ मन सावन में।
पिय!दादुर हूक बढ़ाय रहे, कुहके नहीँ कोकिल आँगन में।
सब अंगहि घोर तरंग उठे,बस आग लगी मृदु यौवन में।७८।

बाहर हेर रही पगली,हिय में मनमोहन ज्ञात नहीं है ?
साँस चले जिसके कारण,समझी मन की यह बात नहीं है?
सूर्य कहाँ उगता उर का,खिलता पियु के बिन प्रात नहीं है ? ।
भृंग सरोज सुबंध बिना,विकसे उर का जलजात नहीं है ।७९।

मोह न मान न दंभ शुभे ! यह प्रेम हनौं सब व्याधि मिटौ हैं।
याद नहीं कुछ री !अब तो ,जग के रस से कब ध्यान हटौं है ।
हेर रहा खुद को कब से,खुद ही खुद से चुपचाप कटौं है ।
प्रेम रसायन पान कियो ,अब प्रेम पयोधि सु- आन सटौं है ।८०।

मूल्य दिए मन प्राण गयो,पियु प्रेम उधार हजार न लूँगी ।
एक तुम्हीं मधुमास विभो !अब साजन !अन्य बहार न लूँगी ।
और लखूं किसमे खुद को!,पियु दर्पण देख निहार न लूँगी ?
ज्ञान बड़ा दुख प्रेम बिना,जड़ मानस रुद्ध विचार न लूँगी ।८१।

रस हीन लगे सब व्यंजन री !इसमे सखि साजन नून नहीं ।
पियु के बिन चित्त हताश लगे,जँचता जड़ सावन सून नहीं।
सजना अति शीतल छाँव सदा,क्षण हेत नहीं द्वय जून नहीं।
वह चैन न ले तबलौ सजनी !उपजे सुख जबलो दून नहीं।८२।

परिरंभ लिए पियु मग्न मना,बिजली तन में अवधान करे ।
पुलकूं अति अंग अनंग बनी,सजना लखि नित्य गुमान करे ।
क्षण एक न ध्यान हटे उसका,रति रात सदा द्युतिमान करे ।
अति हर्ष अमापित नित्य मिले,मुझको खुद में लयमान करे ।८३।

गोकुल कृष्ण पधार रहे,बृषभान लगी पथ व्यग्र निहारे ।
क्यों पग आज दिए मग में,तिथि पुण्य गणे बिन सोच विचारे ?
दंश हमे अति नाथ न क्यों ,दिन योग गणे फिर पंथ सिधारे ।
भाग्य लगे विरही रहना,गणते न हमें यदुनाथ हमारे ।८४।

छेड़ रहे जब नीर भरूँ,दिक् ढेर करे बृज मे बनवारी ।
फोड़ दिए मटकी सिर के,रसबोर भई लिपटी तन साड़ी ।
मूल्य नही इतनौ दधि के,घट पण्य करूँ नित नूतन भारी ।
मात न ताजन देत लला,बिगड़े शह पा अति कुंज बिहारी ।८५।

यमुना तट मुरली टेर रहे,चहुँ ओर विराजे राग घना ।
मृदु नृत्य करे बृषभान लली,नभ से धरती तक प्रेम सना ।
घनश्याम कदंब सुरम्य चढे ,तरु मूल हँसे अति धन्य तना
अनुराग लगे जिमि मूर्त हुआ,हरषे नर नार सुप्रीत मना ।८६।

कटिबंध लगे सखि टूट गए,सजना रति में बरजोर करे ।
मृदु चुंबन की बरसात करे,क्षण सो न सकूँ जग भोर करे ।
मनुहार करुँ जितना पियु से,उतना दिक् और कठोर करे ।
लगता जिमि बादल नीर भरा,नभ से द्रुत पावस घोर करे ।८७।

सजना सुधि भूल गए कित तौं,सुन !आग लगी इस सावन में।
इतना जग में दुख कौन सहे,विरहाग्नि जले तन में मन में।
तप चूक गया हम क्या न किए,मधुमास न क्यों इस जीवन में।
अरि भी न लभे यह घात कभी,यह शाप न हो मृदु यौवन में।८८।

यौवन मूर्त अरी ! लखि कै,खुद मादकता सकुचाय रही है ।
अंग-अशेष विलास लिए,रति काम अनंत बढाय रही है ।
रश्मि लगे निज यौवन की,रुचिता कर मुक्त लुटाय रही है ।
संत-असंत अभेद लगे,रतिके सबको बहकाय रही है ।८९।

नृत्य करे मन मोर शुभे,नभ मे अति मेघ सु-श्याम घना है ।
लोट रही धरती बिछके,अति गर्वित लोहित व्योम तना है ।
काम निवाड़क बूँद गिरे,लगता जिमि राग सदेह सना है ।
कोमल है धरणी गुण से,गुण से नभ घोर कठोर बना है ।९०।

शांत सरोवर में रतिके,मृदु कंकड़ प्रेम उछाल चली है ।
चाँद प्रमत्त हुआ लखि के,जब चीर निपात सँभाल चली है ।
सत्य सुनो ! रवि से पहले,कितने तुम प्रात निकाल चली है ।
आह उठी उर से कितनी,मनसा पर पत्थर डाल चली है ।९१।

तत्व समाहित है सब हीं,मिल साथ गया मृदु प्यार मिला है ।
मान मिले क्षण को जग में,इसमे कह किसको सार मिला है ।
कागज का क्षण पुष्प मिले ,परखो यदि केवल खार मिला है ।
कागज की बस नाव मिली,पतवार छिनी कब पार मिला है ?९२।

कौन कहो !रजनी भर री!रव दे मुझको नित हेर रही है ?
तान निरंतर कौन सखे !बिन टूट दिए मृदु टेर रही है ?
लगता दिन-रैन अजान वही,तन पे अँगुली निज फेर रही है ।
मुक्त करे क्षण को लगता,भुजबंध बढा पुनि घेर रही है ।९३।

प्रेम न शब्द न वाक्य अरी!यह मूर्त सदा शुचि दर्पण जैसा ।
प्रेय सपूज्य सदा जिसमे,इससे गुरु भाव न अर्पण जैसा ।
धार लिए जिन धन्य वही,गमके फिर जीवन चंदन जैसा ।
ध्यान करो इसका जबही,सुधि भाव भरे नित वंदन जैसा ।९४।

शेष बचा न धरो कुछ भी,यह प्रेम समर्पण है अति भारी ।
सर्व तुले हलकी तब भी,रखिए पलड़ा जगती निधि सारी ।
प्रेम अजीब रसायन है,जग जीत गये जिनने सब हारी ।
ज्ञात नहीं पर सत्य विभो,शुचि प्रेम बिना बिलखे नर-नारी ।९५।

रिक्त रही मटकी न भरी,नित फोड़ रहे मनमोहन बाँके
छेड़ रहे मुरली मग में,चितचोर्य कियो हँसके उर झाँके ।
ग्वाल सखा कुछ संग लिए,घट भग्न करे पुनि गोधन हाँके ।
धन्य हुई लखिके उनकै,बिन योग लभै हम धूल न फाँके ।९६।

आज मिले हम मात्र नहीं, यह मेल पुनीत सनातन सा है।
चेतनता का मूल यही,लिपटा उर में अस पंदन सा है।
रुग्ण बने जग में तब ही,जब प्रेम अभाव विखंडन सा है।
बद्ध बने जब प्रेमिल हो,समझो तब कानन नंदन सा है।९७।

प्रीत हुई गुण रीत गए,अपराध कहो ! फिर क्यों गणते हो ?
पंक-अपंक अभेद लभा,फिर भी नित कीचड़ में सनते हो ?
प्रेय मिटा जब प्रेम बचा,उस पे फिर क्यों इतना तनते हो ?
ज्ञेय कहाँ कुछ प्रीत बिना,छल ज्ञान विधायक क्यों बनते हो ?९८।

अंबुधि प्रेम अनंत लिए !सरिता अति व्याकुल दौड़ पड़ी है।
यौवन का मृदु भार लिए,निकली रमणी पियु द्वार खड़ी है।
नींद उड़ी पल चैन नहीँ,जबते पियु से द्वय आँख लड़ी है।
गोद उठा भुज बंध कसो,अब प्रीत अनंत अशेष झरी है।९९।

सो न शुभे !मृदु सावन है ,छत पे चल प्रीत झरी मृदु ले लें।
लौट न आ सकती क्षण ये,मिल आज विभो !रजनी भर खेलें।
चाँद उजास उलीच रहा कुछ रश्मि बिने हम भी रस दे लें।
जीवन युद्ध लड़े न डरें,रस पंथ गहें चलके दुख ठेलें।१००।

पंथ निहार रही पलकें,रतिके! तिथि पुण्य उचार रही है ।
प्राण प्रिये ! द्रुत आन मिले,मन में रस राज विचार रही है ।
दर्पण लेकर हाथ विभो, निधि रूप विशेष सं़वार रही है ।
भाँति अनेक करुँ रति मैं,नित सोच विचार हजार रही है ।१०१।

चाँद दिखे सखि पोखर में,मन चातक चोर चकोर बना है ।
मंद चले मृदु वायु विभो ! सिहरे मन मोर विभोर बना है ।
पीर न हर्ष अभी द्वय री !तटबंध कटा इक छोर बना है ।
भाव सभी गढता मदने,इक हर्ष बना इक लोर बना है ।१०२।

नेह अनंत अशेष विभो !पग से सिर ले सब अंग पगे हैं।
रोम बसी हर एक तुम्हीं,नित प्रेमिल भाव अनंत जगे हैं ।
एक लगे तुम ही अपनी, अब शेष कहाँ जन और सगे हैं।
प्रेम सुधा अब लब्ध शुचे! जग ने पहले बहु भाँति ठगे हैं।१०३।

तुम कौन रसायन नेह भरे,पियु पीर सुहावन लागि अहौ।
उर दाह किया निज ही कर से,पिय!ताप सहे मुस्काय रहौ।
अलि!मर्म नहीँ कछु ज्ञात हमें, बस मारग साजन साथ गहौ।
जब नेह कियो तबही गुनियो,बिन स्वाद कहाँ विश्वास कहौ।१०४।

****

रहते हम हैं बिसरे-बिसरे,कब रात हुई दिन बीत गए ।
कब साल गए नव वर्ष हुए,कुछ याद नहीं सब रीत गए ।
शुचि चित्र अडोल लिए इक ही,जग के पथ में हम मीत!गए ।
जग में इक रिक्त न ठाँव बचा ,जिस ठौर सनेह न गीत गए।१०५।

प्रेम निबाह करुँ प्रण ले,तन प्राण रहे शचि! शूल चुनूं मैं।
नाम शुचे ! इक रोम बसा,नित याद करूँ दिन रात गुणूं मैं ।
नित्य मिले अपवर्ग तुझे ,मृदु स्वर्ग मिले इक स्वप्न बुनूं मैं।
वृक्ष पलाश सु-छाँव तले ,तुम गीत पढ़ो चिर काल सुनूँ मैं।१०६।

कौन यहाँ दुख दर्द सुने ,जब आज न गोकुल में वनबारी ।
चित्त विचित्र विषण्ण हुआ,मन पे इक बोझ पड़ा अति भारी।
पीर पयोधि उफान करे ,पुनि नाम स-मूर्त करौं गिरधारी।
नागर नाम न व्यर्थ करो,द्रुत आज पयान करौं त्रिपुरारी।१०७।

योग न धर्म न ज्ञान लभे,इक प्रेम सधे कुछ और न देना ।
कृष्ण भजूं दिन रात रटूं,बस और प्रभु कुछ तौर न देना ।
मात्र सुबोध सनेह रहे,जग का अवलंबन ठौर न देना ।
प्रेम सुवास न प्राप्ति जहाँ,वह गेह कभी सिरमौर! न देना ।१०८।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - अनुराधा पाण्डेय

जन्म - 15 अप्रैल, वाराणसी

शिक्षा - परास्नातक द्वय शोधार्थी

विधा - गीत, कविता, मुक्तक, दोहा, कुण्डलिया, कह-मुकरी सवैया छंद, घनाक्षरी, नवगीत।

प्रकाशन - मनहरण घनाक्षरी में नया अनुसंधान, एक नवीन सवैया का सृजन गीत संग्रह 'आधीरा', मुक्तक संग्रह 'आद्विका', सात सांझा संग्रह संकलन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, मुक्तक, गीत प्रकाशित, कविता संग्रह एवं कुण्डलिया दोहा संग्रह प्रकाशाधीन।

काव्य पाठ सम्मान - दैनिक जागरण द्वारा आयोजित कवि सम्मेलन में देश के शीर्षस्थ कवि डॉ. हरिओम पवार, डॉ. सुरेश अवस्थी, डॉ सुरेन्द्र दुबे जी के साथ मंच पर काव्य पाठ।

- काव्यांचल मंच द्वारा प्रदत्त काव्य-केसरी, काव्य शिखर सम्मान, काव्यार्या सम्मान। लखनऊ कन्सर्न्ड थियेटर सवैया पर प्रेरणा प्रदीप सम्मान। साहित्य दीप द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, पाठशाला काव्य गुंजन द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, काव्य चौपाल द्वारा सर्वश्रेष्ठ रचनाकार सम्मान। विश्व हिन्दी रचनाकार मंच द्वारा- हिन्दी सेवी सम्मान, हिन्दी सागर सम्मान विश्व हिंदी लेखिका मंच द्वारा श्रेष्ठ कवयित्री सम्मान, नारी सागर सम्मान, प्रतिभाशाली रचना कार सम्मान, नवांकुर काव्य समाचार पत्रिका द्वारा प्रखर तूलिका सम्मान, काव्ययिनी एवम् श्रेष्ठ लेखनी सम्मान, साहित्यदीप मंच द्वारा साहित्य दीप शलाका सम्मान।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी।

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-86666-02-4

मूल्य- 55/-